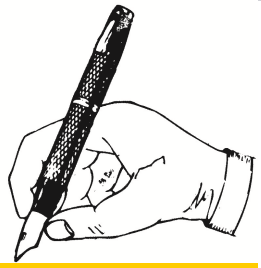

सम्पादकीय

पौषमास सनातन धर्म में अन्य मासों की तरह महिमामण्डित है। हाल के दिनों में भ्रान्तिवश कुछ लोग इसे बहुत ही गर्हित मास मानने लगे हैं। यहाँ तक कि पूजा-पाठ के लिए भी उसे वर्जित करने लगे हैं। लेकिन यदि हम अपने शास्त्रों का अवलोकन करें तो पता चलता है कि इस मास में भी अनेक व्रतों का विधान किया गया है। एकादशी, दशमी, अमावस्या, सप्तमी, अष्टमी आदि तिथियों में व्रतों के विधान किये गये हैं। आज आवश्यकता है कि हम खरमास नाम के कारण उन भ्रान्तियों को दूर करें तथा कुछ अज्ञानी ज्योतिषियों के द्वारा फैलायी गयी कथाओं पर ध्यान न दें।

यहाँ अतीत के कुछ उन अभिलेखों का संग्रह किया गया है, जिसमें पौष मास में शुभकर्म करने का विधान है।

मन्दाग्नि का कुण्ड अभिलेख, बिजौली अथवा विजयावली का अभिलेख

यह अभिलेख चित्तौर से 50 मील पूर्व-उत्तर कोण में तथा बूँदी से 35 मील पश्चिम दक्षिण कोण में अवस्थित है। कनिंघम ने अपने रिपोर्ट में इसका उल्लेख किया है।[1] यहाँ 'मन्दाग्नि का कुण्ड' नामक एक कुण्ड है। इसके किनारे 3 फीट चौड़ा एवं 8 फीट लंबा एक अभिलेख मिला है। इसमें बड़े-बड़े अक्षरों में विभिन्न तिथियों में लोगों के द्वारा दान किये जाने का उल्लेख है-

द्वितीय पंक्ति में **संवत् 1376 वर्षे पौष सुदि 10 रवौ नैगम कायस्थ श्रीकाक्वसुत बलरुकेण स्वानदान श्री महंकाल प्रब्जाक्ष।**

तृतीय पंक्ति में- **स्वस्ति संवत् 1386 वर्षे पौष वदि 5 सोमो देव श्री महंकाल यात्रा नित्पमेव प्रागंभ**

आठवीं पंक्ति में- **न श्री महंकालहुतेन मन्वखं नित्यं करोति आगतं संवत्-86 पौष वदि 5 सोमे**

इसी शिलालेख में रिक्त स्थान में भी कुछ पंक्तियाँ हैं- **स्वस्ति संवत् 1386 वर्षे पौष वदि 5 सोमे देव महंक मंदाकिनीतीर्थे यात्रा नित्यमेव प्रणामं थयति।**

इन पंक्तियों में हम देखते हैं कि पौष मास में दान देने का उल्लेख हुआ है तथा मंदाकिनी तीर्थ के लिए यात्रा का भी उल्लेख है। इस प्रकार पौष मास में प्राचीन काल में तीर्थयात्रा सहित इन कृत्यों के करने की परम्परा थी।

दिल्ली अभिलेख

इसी प्रकार कनिंघम को दिल्ली में एक अभिलेख मिला था, जिसमें भी पौष मास में तीर्थयात्रा का उल्लेख है।[2] दिल्ली-मिरात अशोक स्तम्भ पर दो तीर्थयात्री-वृत्तान्त हैं।

1. **संवत् 1369 पौषदशम्यां शनौ ले वीरपालसुत सिद्धपति क्रोदवास विथु समायातम्।**
2. **संवत् 1581 वर्षे। पौष सुदि 1 लि. अमरकुपेरोज्य वात्ति।**

ये दोनों अभिलेख भी यात्री-वृत्तान्त प्रकार के हैं, जो इस मास में तीर्थयात्रा की पुष्टि करते हैं।

अलय डोड्ड का कोंकुदुरु दानपत्र

यह दानपत्र 1887 ई. में तत्लीन गोदावरी जिले के रामचन्द्रपुरम् के समीप कोंदुकुरु नामक गाँव से मिला था, जिसे तत्कालीन जिलाधिकारी के द्वारा चेन्नई म्यूजियम में भेज दिया गया।[3] इसमें कुल 7 पत्र हैं। इसमें अल्लय दोड्ड नामक किसी राजा के द्वारा गंगातट अर्थात् गोदावरी के तट पर भगवान् शिव की अर्चना तथा पौषमास के अर्धोदय योग में गुंपिणि नामक गाँव के दान करने का उल्लेख हुआ है। इसमें अर्धोदय योग का उल्लेख दो बार हुआ है-

कदाचिदर्धोदयपुण्यकाले दोड्डक्षितीशोर्चितपार्वतीशः।
दानानि रम्याणि विधाय गंगातटेग्रहारानपि दातुमैच्छत्।।22।।

श्रीशाके करबाणविश्वगणिते साधारणे वत्सरे
पौषेर्धोदयनाम्नि पुण्यसमये कौंतेयगंगातटे।
ग्रामं गुंपिणिनामकं सहलिकं सैश्वर्यभोगाष्टकं
विप्रेभ्योल्लयदोड्डभूपतिरदादाचन्द्रमातारकम्।।23।।

अर्थात् किसी समय अर्धोदय योग का पुण्यकाल में भगवान् शिव की पूजा के उपरान्त दोड्ड राजा ने अग्रहार ब्राह्मणों को गंगा तट पर दान करने की इच्छा प्रकट की। यहाँ ध्यातव्य है कि गंगा शब्द का प्रयोग केवल एक नदी विशेष के लिए नहीं सभी सपवित्र नदियों के लिए हुआ है। यहाँ गोदावरी के तट पर दान किया गया है, किन्तु उसके लिए गंगा शब्द का प्रयोग हुआ है। पौष मास के अर्धोदय योग में पुण्य समय में कौंतेय गंगा के तट पर अर्तात् गोदावरी के तटपर गुंपिणी नामक गाँव कृषियोग्य भूमि हलिक के साथ आठो प्रकार की भोग्य वस्तुओं के साथ अनेक विप्रों को राजा अल्लय ने चन्द्रमा एवं तारा की अवस्थिति पर्यन्त भोग के लिए दान किया।

गौडराज महिपाल का सारनाथ अभिलेख[4]

गौड राजा महिपाल एवं उनके दो पुत्रों श्री स्थिरपाल तथा वसन्तपाल के द्वारा सारनाथ, वाराणसी में गंधकुटी का निर्माण कराया तथा धर्मचक्र एवं धर्मराजिका की मरम्मत करायी। इससे पहले उन्होंने गुरु वामराशि को प्रणाम कर ईशान शिव के मन्दिर में चित्र बनबाये तथा घण्टा की स्थापना की। ये सारे कार्य संवत् 1083 पौष मास की एकादशी तिथि को कराये गये थे। यह पूरा अभिलेख इस प्रकार है

ओं नमो बुद्धाय।
वाराणसीसरस्यां गुरवश्रीवामराशिपादाब्जम्।
आराध्य नमितभूपतिशिरोरुहैः शैवलाधीशम्।।
ईशानचित्रघण्टादिकीर्तिरत्नशतानि यो।
गौड़ाधिपो महीपालः काश्यां श्रीमानकारयत्।।
सफलीकृतपाण्डित्यौ बोधावविविनिर्मितौ।
तौ धर्मराजिकां साङ्गं धर्म्मचक्रं पुनर्भवम्।।
कृतवन्तौ च नवीनामष्टमहास्थानशैलगन्धकुटीम्।
एतां श्रीस्थिरपालो वसन्तपालोऽनुजः श्रीमान्।।
संवत् 1083 पौष 11
.....

यहाँ स्पष्ट है कि इस मास में शिव मन्दिर में घण्टा टाँगे गये थे तथा चित्र बनवाये गये थे। गन्धकुटी का भी निर्माण तथा अन्य वस्तुओं की मरम्मत करायी गयी थी। इस प्रकार प्राचीन भारत में पौष मास के सम्बन्ध में दुष्ट मास या रुक्ष मास की कोई भ्रान्त अवधारणा नहीं थी।

सन्दर्भ

1 कनिंघम, एलेक्जांडर, रिपोर्ट ऑफ द डूर इन वेस्टर्न राजपुताना इन 1971-72 एण्ड 1873-74, भाग 6, कलकत्ता, 1878ई. पृ, 238
2 कनिंघम, एलेक्जांडर, रिपोर्ट फॉर द इयन 1872-73, भाग 5, पृ. स. 144.
3 इपिग्राफिया इंडिका, भाग 5, 1898-99ई., पृ. 53-69
4 इंडियन एंटीक्वेरी, भाग 14, 1885 ई., पृ. 139-140

***